ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय- हिन्दी

दिनांक—12/07//2020 सोना

महादेवी वर्मा

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका दिन मंगलमय हो!

आज पुन: कहानी को आगे की ओर ले चलते हैं।

एन सी इ आर टी पर आधारित

सोना

___महादेवी वर्मा

एक दिन देखा, फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गयी है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिंत लेटी है। पिल्ले आँखें बंद रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे। तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा, हेमंत, बसंत या गोधूलि को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी। संभवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गयी थी। पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर

सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमनेवाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानों इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनंदोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर से आर-पार चौकड़ी भरती रही।

उसी वर्ष गरमियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास कम रहती हूँ ।उनकी देख-रेख के लिए सेवक रहने पर भी में उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती हूँ । भक्तिन,अनुरूप (नौकर) आदि तो साथ जाने वाले थे ही, पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को ले जाने का निश्चय किया, क्योंकि वह मेरे बिना नहीं रह सकती थी।

छात्रावास बंद था अतः सोना के नित्य नैमित्तिक कार्य भी बंद हो गए थे । मेरी उपस्थिति का भी अभाव था, अतः उसके आनंदोल्लास के लिए भी अवकाश कम था।

कठिन शब्दार्थ-

- **संरक्षण = हिफाजत ,पालना पोसना, रक्षा करना।**

- **आश्वस्त = जिसे आश्वासन दिया गया हो, निश्चिंत होना।**
-
- **आनंदोत्सव= खुशियाँ मनाना।**

क्रमशः

कुमारी पिंकी “कुसुम”